५७ : क्षेत्र सभा

दिनांक -१८-०२-२०१२

परिवारमूलक व्यवस्था में पांचवी व्यवस्था के रूप में क्षेत्र परिवार सभा होता है | क्षेत्र परिवार सभा यथावत १०-१० ग्राम समूह/मोहल्ला परिवारों का व्यवस्था में बनी हुई परिवार सभाओं में से १-१ व्यक्ति का निर्वाचन विधि से १०-१० सदस्यों का क्षेत्र सभा बनता है | परिवार मानव संस्कृति, सभ्यता का धारक, वाहक होता है | सभा विधि व्यवस्था का धारक, वाहक होना पहले से सुनिश्चित है | इसी क्रम में परिवारमूलक क्षेत्र सभा गठित होगा | फलस्वरूप अपने-अपने क्षेत्र में संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था को निरीक्षण, परीक्षण, सर्वेक्षण करने का अधिकार हर एक सभा को निहित रहेगा | इस क्रम में हर क्षेत्रवासी मानव संस्कति से सम्पन्न होने का अधिकार यथावत रहेगा जिससे समाधान सर्वतोमुखी रूप में परिणत होता है | इसमें परीक्षण का अधिकार पूरे १० सदस्यों में समान रूप में निहित रहेगा | हर परिवार मानवीय शिक्षा-संस्कार सम्पन्न हुआ कि नहीं, प्रत्येक परिवार उत्पादन-कार्य में समर्थ हुआ कि नहीं हुआ, इसी प्रकार स्वास्थ्य-संयम कार्य में प्रत्येक परिवार सम्पन्न हुआ कि नहीं हुआ इसका शोध का अधिकार दसों सदस्यों में समान रूप में रहेगा | यह क्षेत्र परिवार सभा का वैभव स्थली है | उच्च शिक्षा, क्षेत्र सभा तक सम्पन्न होना हर व्यक्ति में हो ही जाता है | शिशु काल से ३ वर्ष और २ वर्ष प्राइमरी पूर्व यह पांच वर्ष हो जाता है | बाकी १५ वर्ष का शिक्षा में मानवीय शिक्षा परिपूर्ण होना स्वाभाविक है |

ग्राम सभा में प्राइमरी स्कूल, ग्राम समूह सभा में मिडिल स्कूल, क्षेत्र सभा में उच्च शिक्षा व्यवस्था सम्पन्न रहेगा | उच्च शिक्षा में ही हर विद्यार्थी अपने को सत्यापित करना बनता है | उसके पश्चात हर विद्यार्थी शिक्षा में स्वायत्त रहेगा | व्यवस्था का दायित्व उच्च शिक्षा सम्पन्न होने तक है | इस क्रम में क्षेत्र सभा पर्यंत व्यक्ति उच्च शिक्षा सम्पन्न हो जाता है | यही राष्ट्र का स्रोत है | विकल्प विधि से यदि शिक्षा पूर्ण होता है तब हर विद्यार्थी राष्ट्रीयता का स्रोत बन जाता है तथा हर विद्यार्थी सर्वतोमुखी समाधान सम्पन्न होना पाया जाता है | फलस्वरूप न्याय-सुरक्षा कार्य सम्पन्न होना होता है | इसी क्रम में उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम कार्य सम्पन्न होना बनता है | क्षेत्र सभा को महत्वपूर्ण स्थली भी माना जाता है | पहला महत्वपूर्ण स्थली परिवार सभा, दूसरा क्षेत्र सभा, तीसरा महत्वपूर्ण स्थली विश्व परिवार सभा है | इस क्रम में हर मानव स्वयंस्फूर्त विधि से जीना होता है | आज की आवश्यकता भी इसी का है | इसका विशेष वर्चस्व धरती संतुलित रहने के अर्थ में ही है | अभी तक अर्थात अत्याधुनिक विज्ञान युग तक धरती तापग्रस्त होना आंकलित हो चुकी है |

इसका मूल कारण जाँचने पर पता चलता है कि मानव ही इसका कारण है | शिक्षा ही इसका प्रधान वस्तु है | इस विधि से क्षेत्र परिवार सभा तक हर मानव युवावस्था में पहुंचना २० वर्ष की आयु तक पहुंचना यह दोनों संयोग आता है | इस संयोग विधि में यह अनुभव किया गया है कि मानव पूरा समझकर ही जीना बन पाता है | विकल्प विधि से ही पूरा समझना बनता है | पूरा समझने का तात्पर्य अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होना अर्थात अनुभव सम्मत विधि से प्रमाण हो पाना | अनुभव सहज विचार सम्मत व्यवहार पूर्ण होने का मतलब अनुभवमूलक प्रमाण है | सहअस्तित्व में ही अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होना होता है | सहअस्तित्व स्वयं में व्यापक वस्तु में समाहित एक-एक वस्तु के रूप में होता है | इसी में जीवन ज्ञान, रासायनिक ज्ञान, भौतिक ज्ञान समाहित रहता है | इसके योगफल में पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था, ज्ञानावस्था अपने में

उपयोगिता, पूरकता प्रमाणित होना ही संतुलन है | इन चारों अवस्थाओं में संतुलन ही व्यवस्था है | इसका अध्ययन ही विकल्पात्मक अध्ययन है | जो सर्वमानव में, आचरण में, शिक्षा विधि में अथवा शिक्षा क्रम में, व्यवस्था क्रम में, संविधान क्रम में होता है | क्रम का मतलब सर्व देश काल में, सर्व भाषा में प्रस्तुत होना ही महत्वपूर्ण कार्य है | इस आशय से इसे प्रस्तुत किया जाता है कि एक भाषा में प्रस्तुत किया जा सकता है तो सर्व भाषा में प्रस्तुत हो सकता है | हर भाषा में आचरण का स्वरूप प्रस्तुत होना ही सार्वभौम शिक्षा का आशय है |

अभी तक सभी देश काल में व्यक्तिवादी, समुदायवादी संविधान प्रचलित है | यह कभी भी अपराध-मुक्त नहीं हो सकता | शिक्षा में संघर्ष और युद्ध, लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद प्रस्तुत किया जाता है | इस प्रस्तुति में पारंगत व्यक्तियों को विद्वान माना जाता है | इस शिक्षा को पाकर कौन ऐसा व्यक्ति है जो सुशील हो सकता है? अर्थात न्याय संगत विधि से जी पाता है | चाहना सब में है | शिक्षा व्यवस्था में यह कहीं देखने को नहीं मिलता | न्यायपूर्वक जीना पहला कार्य है | इसके बाद समाधानपूर्वक सत्य सहज विधि से जीना होता है | व्यक्तिवादी, समुदायवादी चेतना से प्रस्तुत संविधान के अनुसार मानव समाधानपूर्वक जी नहीं सकता क्योंकि लाभोन्माद, भोगोन्माद, कामोन्माद अमानवीयता का द्योतक है | क्योंकि युद्ध एवं संघर्षपूर्वक जीना अपराधिक सिद्ध हो चुका है | यह हर व्यक्ति सोचने योग्य वर्चस्व सम्पन्न है | शनैः शनैः सोचते सोचते अंतिम बिंदु विकल्प के रूप में पाते हैं | तब यह परिवर्तित होकर व्यक्ति भ्रम-मुक्त, अपराध-मुक्त होना देखा गया है | इसे शोध अनुसंधानपूर्वक जीकर देख चुके हैं | चाहे एक ही व्यक्ति क्यों न हो |

इस सब को सोचने पर मानव अपने जंगली बुद्धि से मारपीट अपनाया | वन एवं वन्य जीवों को संतुलित बनाये रखना मानव का अधिकार है क्योंकि वन एवं खनिज संतुलित होने पर ऋतु काल संतुलित रहता है | इसे हर व्यक्ति परिशीलन कर सकता है | ऋतु संतुलन का मतलब गरमी, जाड़ा, वर्षा ऋतु संतुलित रहने से है | मानव शरीर शाकाहारी होने पर पता चलता है कि हर मानव ऋतु काल का उपयोग कर उत्पादन करना ही संतुलन है | ऋतु काल का सम्बंध मानव से ही है | जंगल, पत्थर आदि से संतुलन होना नहीं होता है, केवल मानव ही संतुलन का आधार होता है | इस क्रम में मानव भ्रम एवं अपराध-मुक्त हुए बिना संतुलन नहीं बना पाता | सर्वाधिक व्यक्ति अथवा धरती पर जितने भी लोग हैं उनमें से अधिकांश व्यक्ति धरती के साथ, वन एवं वन्य जीवों के साथ, परिस्थितियों के साथ नियंत्रित, संतुलित रहना आवश्यक है | इसका बोध चेतना विकास मूल्य शिक्षा से सम्पन्न होने पर होता है | यही स्वरूप व्यक्ति का एकमात्र सूत्र व्याख्या है | यही तन, मन, धन रुपी अर्थ का सुरक्षा का तात्पर्य है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)